आदरणीय जगदीश भाई जी

अपनी रचना के पतन एवं उनके आहवान को देखकर जगत नियन्ता फिर से जब नव निर्माण के लिए धरा पर अवतरित होते हैं, पर अपनी बात बताने एवं समझाने के लिए ज्ञान सागर को ब्रह्मा तन का आधार लेना पड़ता है। जिस प्रकार भगवान को अपना ज्ञान प्रकट करने के लिए हमारे व उसके बीच में ब्रह्मा माध्यम बनता है, इसी प्रकार भगवान के गुह्य ज्ञान को जग के सामने रखने के लिए कोई ऐसा माध्यम चाहिए, जो उस ज्ञान को ऐसे ढंग से समझा सके, जो भगवान जनमानस को समझाना चाह रहे हों, और जग वाले भी, उस गहन ज्ञान को सहज व सरल रीति से समझ सके,वा वह अनमोल ज्ञान उनके फायदे का लगे। भगवान सिर्फ उन लोगों के सामने प्रत्यक्ष होता है जो उसकी बातों को सुनने की अभिलाषा रखते हों और समझते हों,वह उन बच्चों से बात करते हैं जो उसकी बातों की वैल्यू समझते हों,वह अपने बच्चों से बात करते हैं, वे कोई भाषण या प्रवचन नहीं करते हैं, तो फिर भगवान की बातें सारे जग में कैसे पहुँचाई जाएं? और कौन पहुँचाये ? ब्रह्मा बाबा पहुँचा सकते थे, क्योंकि वह अनुभवीमूर्त थे,परन्तु ब्रह्मा बाबा के साथ तो स्वयं भगवान रहते थे इसलिए वह जनता–जनार्दन के बीच गली–गली कैसे जाते! इसलिए कोई ऐसा बुद्धिमान व समर्पण व्यक्ति हो, जो पहले तो वह खुद भगवान की बात को अच्छी रीति समझे, फिर बिना कोई मान–शान–अभिमान के वह भगवान की बातें सबके सामने स्पष्ट रूप से रखने का भाव एवं हिम्मत रखे,क्योंकि जो मान्यतायें 2500 वर्ष से चली आ रही थी,उसके जरा भी विपरीत बात जनमानस में रखना और जिन मान्यताओं का सम्बन्ध भावना से जुड़ा हुआ हो,उनको तोड़कर नई मान्यताओं के प्रति भावना बैठाना,जिनका कोई प्रैक्टिकल प्रुफ न हो,विज्ञान की नई बातों को कहने में व्यक्ति एक बार फिर भी नहीं डरता,क्योंकि वह तो स्थूल चीजों की बातें होती हैं,जो किसी न किसी यन्त्र के माध्यम से देखी जा सकती हैं,पर आत्मा – परमात्मा तो अदृश्य सत्तायें हैं उसकी बातों को स्पष्ट करना,थोड़ा

मुश्किल तो होगा ही,और बात जहाँ श्रद्धा एवं विश्वाश की हो तो निश्चित ही आपोजीशन का सामना करना होगा! इसलिए भगवान को एक ऐसे शख्श की जरूरत थी जो बुद्धिमान के साथ–साथ भावना प्रधान भी हो,समझदार होने के साथ–2 सहनशील भी हो,निर्भय होने के साथ–2 निर्दोष भी हो,अनुभवी होने के साथ निर्माणचित भी हो,सत्यता के साथ–2 सभ्यता का धनी हो,आध्यात्म के साथ–2 विज्ञान का भी अच्छा ज्ञान रखता हो अर्थात समझ रखता हो,अन्धश्रद्धा वाला न हो,भक्ति के साथ–2 आधुनिकता की भी समझ हो अर्थात दुनिया की भी सत्य समझ हो,अर्थात दुनिया का भी ज्ञान हो,परीक्षाओं का अगर समुन्दर भी पार करना पड़े तो भी दिलशिकस्ती का दिल न हो,रहमदिल के साथ उदार एवं दातापन का भाव सदा रहे,बार –बार असफलताओं के तिमिर में भी आँखों में अन्तिम सफलता की चमक सदा रोशन रहे,अपमानों का दंश बार–2 झेलने के बाद भी जिसमें उत्साह का सागर सदा लहराता रहे,भगवान में सम्पूर्ण निश्चय हो,सारी दुनिया एक तरफ क्यों न हो जाये, पर भगवान की बात पर अटल विश्वाश किसी भी प्रकार का जरा भी संशय न हो,बाहर से कितना भी नुकसान का रूप हो पर भगवान की मत पर अचल–अडोल अविनाशी निश्चय हो,निर्मल वृति के साथ–2 निश्छलता की दृष्टि हो,विद्वता की शख्शियत के साथ विनम्रता की प्रतिमूर्ति भी हो, भगवान की जिन बातों को वो समाज के सामने रखने जा रहा हो, पहले वो उनका प्रारूप हो, तब वे बातें लोगों के जेहन में उतर पायेंगी। ये बातें कौन कह रहा है ? लोगों का ध्यान परमात्मा की ओर न जाकर,लिखने वाले की ही ओर जायेगा, इसलिए उसके अन्दर वह चीज होनी चाहिए,बाद में लोग समझेंगें कि ये बात किसी मनुष्य की नहीं हो सकती, लेकिन पहले तो जो सामने है उसी पर ध्यान जायेगा! ऐसी आत्मा जो बेदाग हो , भगवान को पाने की ललक हो,इस दुनिया से पूरा दिल से वैराग्य हो,पुरूषार्थ की पराकाष्ठा हो,दिल की गहराई से लगन हो,निःस्वार्थ भावना हो,समाज के प्रति कुछ कर गुजरने का जज्बा हो,बेजोड़ प्रतिभा का धनी

हो,हिम्मत का आगाज हो,सेवा में पूरा समर्पण हो,वही इस कार्य के उपयुक्त हो सकता है,जिस पर भगवान को भी पूरा विश्वाश हो कि हम जो भी कहेंगें उसके अनुरूप ये दिखेगा भी,और खुद भी अच्छे से समझेगा,और दूसरों को भी स्पष्ट एवं सरल भाषा में समझा भी सकेगा ! फिर भगवान के प्रति वह भी उतना ही ईमानदार हो,ट्रष्टीपन हो,क्योंकि यह ज्ञान इतना ऊँचा,श्रेष्ठ एवं हितकर है,कि जो भी इसे

सुनता है, और समझता है, तो वह सुनाने वाले की महिमा करने लगता है,यह ज्ञान किसका है यह बताने पर भी उसका ध्यान बहुत कम ही जाता है, इसलिए कई बार सुनाने वाले को भी भ्रम होने लगता है, कि ये तो मेरा ही कमाल है, मैंने बड़ा अच्छा ज्ञान सुनाया, मेरी बुद्धि तो बड़ी अद्भुत है, जो सब बड़ी भावना से ज्ञान को सुनते हैं,लोगों को बहुत ही अच्छा लगता है,बिना मेहनत की महिमा अभिमान पैदा करती है,अतः उसे बिल्कुल निर्लिप्त रहना आता हो,पर यह तो परवरदिगार का परम कमाल है जो उसके जहान में एक ऐसा भी फूल था, जिस पर उनकी नजर पड़ी वह उसे अत्यन्त उपयुक्त लगा,निहारा जिसे नूर-ए-इलाही ने,सवाँरा जिसे जहान-ए-माली ने,सँभाला जिसे खुदा की अति विशिष्ट डाली मादर-ए-जहान ने,जिसे जानी जाननहार त्रिकालदर्शी,त्रिभुवनाथ ने ढूँढ कर निकाला हो,जिसे भगवान ने खुद फुर्सत में तराशा हो,पतित पावन परमात्मा करनकरावनहार ने स्वयं अपनी लेखनी से जिसकी श्रेष्ठतम् तकदीर की लकीर खींची हो,जिसे ज्ञान सागर ने स्वयं आकर पढ़ाया हो,स्वयं विधाता ने जिसमें रंग भरा हो,प्यार के सागर का अपार जिसकी भावना को सिंचित कर रहा हो,वरदाता सर्वशक्तिवान का वरद हस्त जिसके सिर पर हो,जिसके विवेक को स्वयं बुद्धेश्वर ने जाग्रत किया हो,जगत नियन्ता नव सृष्टि सृजनकर्ता जिसका खुद गुरू बना हो,सारे वेदों शास्त्रों का ज्ञाता महावीर स्वयं जिसकी लेखनी को शब्द दे रहा हो, वह अद्भुत रचना सोचो तो भला कैसी होगी? उसका वर्णन जिसने स्वयं भगवान को अपनी आँखों से नवयुग रचते देखा, अकर्ता को हर कर्म करते देखा,वह अति विशेष ते विशेष श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ विधाता की अनुपम

कृति थे हम सबके अतिसय प्रिय आदरणीय जगदीश भाई जी,जो कि साकार मात –पिता की अति विशिष्ट ते विशिष्ट रचना,बुलन्द हौंसलों की उड़ान,गगन के ध्रुव तारा,भगवान के नयनों के नूर,कुमारों के कोहिनूर,आध्यात्म में कलम के अविरल सिपाही, त्याग की परिभाषा,वैराग्य की विवेचना,सतत साधना के सजग साधक, मूर्धन्य लेखक,कुदरत का करिश्मा, खुदा का अनमोल तोहफा,मानको मापदण्ड, अमिट दस्तावेज,वरदानों की खान, विशेषताओं के अनुपम जरदार, काबीलियत का बेजोड़ कमाल, विद्वता की पहचान, अद्भुत व्यक्तित्व के प्रारूप,सज्जनता की कसौटी, सिद्धांतों की गरिमा,प्रेरक प्रसंग,कविता का अविस्मरणीय छन्द,शब्दों के जादूगर,सिद्धि विनायक,दिव्य दृष्टि के संजय, साहित्य के पुरोधा,कर्मठ – कुशल – करिश्माई वक्ता,मंच की पहचान,शान्त सजग आली उस्ताद थे।